सावयव सिद्धान्त
(Organic Theory).

* परिचय
* सिद्धान्त का उदय
* हर्बर्ट स्पेन्सर और सावयव सिद्धान्त व्याख्या
* मान्यताएं
* आलोचना
* सावयव सिद्धान्त का महत्व
* निष्कर्ष

परिचय: सावयव सिद्धान्त के अन्तर्गत राज्य को शरीर का आकार माना जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार जिस प्रकार शरीर के विभिन्न अंग होते हैं इसी प्रकार राज्य के विभिन्न अंग होते हैं और वह आपस मिलकर बनता है। जिस प्रकार शरीर के अंगों का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं होता और उनका उन अंगों से पृथक भी अस्तित्व होता है, उसी प्रकार व्यक्तियों को मिलकर राज्य का निर्माण होता है किन्तु उन व्यक्तियों से पृथक भी राज्य का अपना एक अस्तित्व होता है। जिस प्रकार शरीर से पृथक अंगों का कोई अस्तित्व नहीं होता उसी प्रकार राज्य से पृथक व्यक्तियों का कोई अस्तित्व नहीं होता। मानवीय शरीर के समान ही राज्य भी विकासशील होता है। इस प्रकार सावयव सिद्धान्त राज्य को कृत्रिम यन्त्रात्मक न मानकर उसको स्वाभाविक जीवित शरीर मानता है।

सिद्धान्त का उदय:

वस्तुतः सावयव सिद्धान्त उतना ही पुराना है जितनी कि राजनीतिक विचारधारा। प्लेटो ने राज्य को एक वृहत् आकार का मनुष्य बतलाकर व्यक्ति तथा राज्य के बीच पूर्ण सादृश्य स्थापित किया है। उसने समाज को तीन वर्गों में विभाजित किया है - शासक, सैनिक तथा श्रमिक; और इस विभाजन का आधार मानव आत्मा के तीन गुण - बुद्धि, साहस तथा इन्द्रिय तृष्णा - माने जाते हैं। अरस्तू ने भी राज्य तथा नागरिकों की तुलना शरीर के अंगों से की है। रोमन विधान विचारक भी इसी विचारधारा के समर्थक हैं।

सेलिसबरी, पेडुआ, ओकम, एक्वीनास आदि कई मध्यकालीन लेखकों ने भी इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। उसके बाद हॉब्स और लॉक ने भी इसी विचारों का प्रतिपादन किया। इसी प्रकार हॉब्स ने अपनी पुस्तक

Ajanta Oxford

Scanned with CamScanner

लेवियाथन (Leviathan) अर्थात् 'विशालकाय समुद्री जन्तु' रखा।

19 वीं शताब्दी के प्रारंभ में राज्य की उत्पत्ति के बारे में सामाजिक समझौता सिद्धान्त का ह्रास होने के बाद सावयव सिद्धान्त का उदय हुआ। प्राचीन युग और मध्ययुग के विचारकों ने भी राज्य और मानव शरीर के बीच तुलना स्थापित की थी। उनका यह विचार था कि राज्य मानव शरीर की भाँति [illegible] होता है। राज्य के इस सावयव सिद्धान्त का जन्म प्राचीन यूनान में हुआ और यहाँ से [illegible] और [illegible] की रचनाओं का सहारा प्राप्त हुआ। स्पेन्सर ने इस सिद्धान्त को पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया। ब्लंटशली ने आगे चलकर राज्य की तुलना [illegible] करके और [illegible] उसे [illegible] का रूप दे दिया।

हर्बर्ट स्पेन्सर और सावयव सिद्धान्त :

यद्यपि सावयव सिद्धान्त अत्यन्त पुराना है। Plato प्लेटो, सिसरो, रूसो आदि विचारकों की रचनाओं में इसका उल्लेख मिलता है। लेकिन सावयव सिद्धान्त का विधिवत विवेचन अंग्रेज विचारक स्पेन्सर ने किया है इसी कारण सावयव सिद्धान्त स्पेन्सर के नाम से जुड़ा है। उन्होंने राज्य और व्यक्ति के बीच समरूपता को दर्शाया कि राज्य भी एक प्राकृतिक जीवित शरीर है जो अन्य जीवधारियों से किसी तरह भिन्न नहीं है। उन्होंने राज्य और शरीर के बीच निम्न समानताएं बतलायी हैं—

समानताएं :

① **रचना :** जिस प्रकार शरीर की रचना रक्त, मांस, हड्डी आदि से होती है, उसी प्रकार राज्य भी व्यक्तियों से मिलकर बना है।

② **जन्म :** प्राणी शरीर तथा राज्य दोनों का प्रारंभिक जीवाणुओं के रूप में आरंभ होता है।

③ **विकास :** जीवधारी और राज्य दोनों की वृद्धि और विकास का क्रम एक-सा ही है। जिस प्रकार जीव और शरीर अमीबा से विकसित होकर परिपक्वता की ओर बढ़ते हैं उसी प्रकार राज्य भी धीरे-धीरे विकसित होकर आधुनिक रूप प्राप्त करता है।

④ **परस्पर निर्भरता :** मानव शरीर और राज्य दोनों में ही अन्तर-निर्भरता पायी जाती है। जिस प्रकार एक अंग के निर्बल और बीमार हो जाने का प्रभाव सम्पूर्ण शरीर पर पड़ता है उसी प्रकार राज्य का असंतुलन एवं [illegible] व्यक्तियों पर पड़ता है। उनके कार्यों की एक दूसरे पर प्रतिक्रिया होती है। यदि लुहार अपना काम बन्द कर दे, किसान अन्न का उत्पादन न करे तो सम्पूर्ण समाज की हानि पहुँचेगी।

Scanned with CamScanner

(5) **संगठन** : शरीर तथा राज्य का संगठन भी एक ही प्रकार का होता है। शरीर के तीन भाग होते हैं - पोषण प्रणाली, वितरण प्रणाली और नियामक प्रणाली। तीनों प्रणालियों पर मस्तिष्क अपना पूर्ण नियंत्रण रखता है। राज्य में पोषण प्रणाली के अनुसार उत्पादन किया, वितरण प्रणाली के अनुसार आवागमन का कार्य तथा मस्तिष्क के समान शासन होती है

(6) **विनाश व जन्म** : जिस प्रकार मानव शरीर नाशवान होता है और उसका निरन्तर विकास होता रहता है उसी प्रकार राज्य में वृद्ध और बीमार व्यक्ति मरते रहते हैं तथा उनके स्थान पर नवीन व्यक्ति जन्म लेते रहते हैं।

असमानताएं : इतना साम्य होते हुए भी स्पेन्सर स्वीकार करता है कि राज्य व मानव शरीर में प्रमुखतः दो भेद हैं -

(1) **पारस्परिक निर्भरता की सीमा में भेद** : जीवधारी शरीर के अंग यदि एक दूसरे से अलग हो जाएं तो उनका कोई अस्तित्व नहीं रहता, जैसे हाथ पाँव को शरीर से अलग कर देने पर उसका कोई महत्व नहीं रहेगा। लेकिन यदि राज्य के अंग अलग कर दिये जाएं तो भी उनका महत्व बना रहता है।

(2) **चेतना शक्ति का भेद** : शरीर के अन्तर्गत समस्त चेतना शक्ति मस्तिष्क में केन्द्रित होती है और शरीर के अंगों की अपनी कोई पृथक चेतना नहीं होती, किन्तु राज्य में प्रत्येक व्यक्ति की अपनी पृथक-पृथक चेतना शक्ति होती है जो दूसरे से पूर्णतया स्वतंत्र होती है

इन असमानताओं के आधार पर स्पेन्सर ने यह निष्कर्ष निकाला कि समाज में प्रत्येक की कल्याण की बात सोची जाती है और समाज का अस्तित्व कल्याण के लिए ही होता है। स्पेन्सर के व्यक्तिवादी दृष्टिकोण का यही भाव है।

आलोचना : साहित्यिक दृष्टि से प्राणी शरीर तथा राज्य की तुलना भले ही रुचिकर एवं सुन्दर प्रतीत हो किन्तु वास्तविक अर्थ में राज्य और मानव शरीर के बीच समानता नहीं है और न ही आवयविक सिद्धान्त राज्य के स्वरूप की संतोषजनक व्याख्या है। लीकॉक का मत है कि यदि हम तुलना करते-करते कल्पना बनाने लगें और

उन्होंने कहा कि राज्य एक व्यक्ति है या रीढ़ की हड्डी वाला प्राणी है, तो यह सामान्य के विरुद्ध होगा।"
सावयव सिद्धान्त की उपर्युक्त मान्यता की निम्न आधारों पर आलोचना की जा सकती है :

(1) **समानता पूर्ण नहीं है** : शरीर तथा राज्य में कोई समानता नहीं है जिन तत्वों से शरीर बनता है उनकी तुलना व्यक्ति से नहीं की जा सकती है। शरीर के घटकों का कोई पृथक व्यक्तित्व, इच्छा एवं चेतना नहीं होती वे पर्याप्त रूप से असमान होते हैं, किन्तु व्यक्ति का स्वतंत्र अस्तित्व, इच्छा एवं चेतना शक्ति होती है। यह सत्य है कि समाज तथा राज्य के बिना व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं कर सकता, परन्तु वह उसके बिना जीवित अवश्य ही रह सकता है।

(2) **व्यक्ति का स्थान पूर्व-निर्धारित नहीं होता** : शरीर के अन्तर्गत विभिन्न अंगों का स्थान पूर्व-निर्धारित होता है। शरीर के प्रत्येक अंग के स्थान व कार्य प्राकृतिक शक्ति द्वारा निश्चित किये जाते हैं किन्तु व्यक्ति समाज में अपने स्थान और कार्य का स्वयं ही निर्धारण करता है तथा समाज में उसका स्थान पूर्व-निर्धारित नहीं होता।

(3) **जन्म, विकास तथा मृत्यु के नियम भिन्न हैं** : क्योंकि शरीर दो प्राणियों के संयोग से जन्म लेता है, किन्तु राज्य की उत्पत्ति के लिए दो राज्यों का होना आवश्यक नहीं है। इसके अतिरिक्त जीवित शरीर जिस प्रकार जन्म, विकास और मृत्यु के अनिवार्य नियमों में बंधा हुआ है किन्तु राज्य किसी नियम से बंधा हुआ नहीं है। एक जीवित शरीर आकार में बढ़ता है और उसकी वृद्धि व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर नहीं करती है किन्तु राज्य बदलते रहते हैं और उनकी उन्नति होती रहती है। प्राणी शरीर विनाशशील होता है और एक दिन मृत्यु को प्राप्त होता है। किन्तु इसके विपरीत राज्य स्थायी होता है।

इस संबंध में गैटेल ने कहा है कि, "विकास, वृद्धि तथा मृत्यु राज्य के जीवन की आवश्यक प्रक्रियाएँ नहीं हैं। प्राणी शरीर के जीवन से उन्हें अलग नहीं किया जा सकता, जिस प्रकार एक वृक्ष या प्राणी नया जीवन ग्रहण करता है उसी प्रकार राज्य का प्रादुर्भाव नहीं होता है।"

(4) **राज्य के कार्यक्षेत्र की संतोषजनक व्याख्या नहीं** : सावयव सिद्धान्त, राज्य को क्या करना चाहिए? इस प्रश्न का समाधान नहीं करता है। सावयव सिद्धान्त विभिन्न अंगों

ने राज्य के कार्यों के संबंध में भिन्न-भिन्न निष्कर्ष निकाले हैं और इस सिद्धान्त का प्रयोग व्यक्तिवाद तथा निरंकुश शासन तक किसी भी प्रकार की परस्पर विपरीत विचारधारा का समर्थन करने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए स्पेन्सर ने इस सिद्धान्त का प्रयोग व्यक्तिवाद के समर्थन हेतु किया है परन्तु हक्सले ने इस निष्कर्ष को गलत बताया है कि प्राणी शरीर में मस्तिष्क शरीर के अन्य अंगों पर निरंकुश शासन करता है इसलिए समाज को शरीर माना जाए तो राज्य का कर्तव्य निरंकुश शासन होगा।

(5) **आवयविक सिद्धान्त के भयंकर परिणाम**: आवयविक सिद्धान्त को स्वीकार करने से व्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए बहुत अधिक भयंकर परिणाम हो सकते हैं। यदि राज्य को व्यक्ति शरीर माना जाए तो शरीर के अंगों के समान व्यक्ति साधन मात्र रह जायेंगे। इस सिद्धान्त को स्वीकार करने से राज्य के व्यक्तित्व में व्यक्ति का व्यक्तित्व समाहित हो जाता है, उसकी स्वतंत्र सत्ता एवं उसके अधिकारों का महत्व समाप्त हो जाता है। ये मान्यताएं सर्वाधिकारवादी को जन्म देनेवाली निश्चित रूप से अप्रजातांत्रिक है

(6) **स्पेन्सर का सिद्धान्त त्रुटिपूर्ण**: आवयविक सिद्धान्त को त्रुटिपूर्ण ढंग से स्पेन्सर के द्वारा प्रयोग किया गया है और उसके द्वारा इस सिद्धान्त के आधार पर ऐसे निष्कर्ष निकाले गये हैं जिनका आवयविक सिद्धान्त से कोई मेल नहीं खाता। स्पेन्सर द्वारा आवयविक सिद्धान्त के आधार पर व्यक्तिवाद का समर्थन किया है गया है। किन्तु जैसा कि बार्कर ने कहा है कि, " प्राणी विज्ञान तथा व्यक्तिवाद दो ऐसे बेमेल घोड़े सिद्ध हुए हैं जो प्राणी को दो विरोधी दिशाओं में खींचते हैं।"

आवयविक का महत्व

उपर्युक्त आलोचनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आवयविक सिद्धान्त का कोई मूल्य और महत्व नहीं है। वस्तुतः राज्य के स्वरूप तथा व्यक्ति राज्य के पारस्परिक संबंध को समझने के लिए यह सिद्धान्त अत्यन्त उपयोगी है। एम. कैटलिन ने इस सिद्धान्त को श्रेष्ठ राजनीतिक दर्शन का आधार सिद्ध माना है। राज्य एक जीवधारी नहीं है वरन वह एक जीवधारी के समान है। वह जीवधारी नहीं है, क्योंकि उसकी बनावट शारीरिक नहीं है। वह मानसिक बनावट है सामान्य उद्देश्य के लिए वह व्यक्तियों का संगठन है।

Scanned with CamScanner

निष्कर्ष : राज्य के स्वरूप को शरीर रूप में प्रतिपादित करनेवाले उपर्युक्त सिद्धान्तों व विचारों में हमें दो प्रकार की विचारधाराओं का दर्शन होता है। प्रथम विचारधारा वह है जिसे अपनाते हुए प्लेटो, अरस्तू, हॉब्स, ब्लंटशली आदि विचारकों ने राज्य को शरीर माना था। द्वितीय विचारधारा ब्लंटशली और प्रमुख रूप से स्पेन्सर द्वारा अपनायी गयी है जिसके अनुसार राज्य न केवल शरीर के समान, वरन् अक्षरशः एक शरीर ही है। इनमें से प्रथम विचारधारा को स्वीकार करते हुए कहा जा सकता है कि राज्य मानव शरीर के समान है, लेकिन राज्य मानव शरीर ही है, इस विचार को स्वीकार नहीं किया जा सकता। वास्तव में राज्य और शरीर के बीच समानता को अधिक महत्व देना उचित नहीं है।

— x —

Girijanand Singh, Asst. Professor
Dept. Political Science
R.N. College Pandaul, Madhubani
Class - Deg I (H), Paper - I
Topics - Organic Theory (आवयविक सिद्धांत)
Date : 28/04/2020

Scanned with CamScanner